वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 360
ISBN-978-93-82071-38-9

जिनागम में शासन देव-देवी

-संकलनकर्त्री-

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी
पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539, पौष वदी 11	मूल्य
1100 प्रतियाँ	8 जनवरी 2013	12/-रु.

भगवान चन्द्रप्रभ एवं पार्श्वनाथ का जन्म-तपकल्याणक

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक:-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

पीठाधीश की कलम से.....

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी में साहित्य सृजन की अविरल धारा को प्रवाहित करके जैनधर्म की अद्भुत प्रभावना की है तथा जैन साहित्य जगत पर भी अनंत उपकार किये हैं। विशेषरूप से आपकी लेखनी से प्रसूत पद्य साहित्य अर्थात् पूजा-विधान से जन-जन को अमोघ शस्त्र के रूप में भक्ति का मार्ग प्राप्त हुआ है।

पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य को सतत प्रकाशित करने के लिए पूज्य माताजी की ही पुण्य प्रेरणा से सन् 1972 में स्थापित दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के अन्तर्गत वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की भी स्थापना की गई, तब से लगातार इस ग्रंथमाला द्वारा साहित्य प्रकाशन का कार्य किया जा रहा है। जहाँ इस ग्रंथमाला ने लाखों श्रावकों एवं श्रद्धालु भक्तों को ज्ञान का लाभ प्रदान किया है, वहीं विशिष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन के माध्यम से इस ग्रंथमाला को भी समाज के मध्य एक विशिष्ट ख्याति प्राप्त हुई है।

इस ग्रंथमाला से जहाँ पूज्य माताजी द्वारा टीकाकृत षट्खण्डागम जैसे महान सिद्धान्त ग्रंथों तथा नियमसार, समयसार, गोम्मटसार, अष्टसहस्री, कातंत्र व्याकरण आदि जैसे मूल आगम ग्रंथों का प्रकाशन होता है, वहीं मुख्यतः पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी व प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित विभिन्न बड़े-छोटे पूजा-मण्डल विधान आदि का प्रकाशन भी समाज के लिए विशेष मांग हेतु बना रहता है। आज हम इस ग्रंथमाला को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानते हैं, जिसके माध्यम से प्रकाशित हो रहे सत् साहित्य का वर्ष भर पूरे 365 दिन भारत के कहीं न कहीं, किसी न किसी मंदिर में मण्डल विधान या साहित्य वितरण आदि के लिए मांग आती रहती है और जैनधर्म व भक्तिमार्ग की प्रभावना में यह ग्रंथमाला नित्य ही तत्पर रहती है।

विशेषरूप से इस ग्रंथमाला द्वारा समाज को लागत मूल्य से भी कम राशि पर साहित्य उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता है, जिससे कि सुविधापूर्वक जन-जन तक साहित्य पहुँच सके। आगे भी इसी प्रकार यह ग्रंथमाला अपना दायित्व निभाती रहे, यही भावना है। वर्तमान में प्रकाशित हो रही इस पुस्तक के माध्यम से आप सभी श्रावकजन विशेष धर्मलाभ को प्राप्त करें तथा जैनधर्म का यह ज्ञान आपके सम्यक्त्व को दृढ़ करने में सदा सहकारी बनकर मोक्षमार्ग को प्रशस्त करे, सभी भक्तों को मेरी यही शुभकामनाएं एवं मंगल आशीर्वाद है।

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

सम्पादकीय

–जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

अर्हन्तो मंगलं कुर्युः, सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि, साधवो मम मंगलम्।।

साहित्य समाज का दर्पण है। शास्त्र स्वाध्याय से ज्ञान मिलता है। ज्ञान से सन्मार्ग मिलता है। सच्चे देव, शास्त्र, गुरु पर दृढ़ श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है।

सम्यग्दर्शन के आठ अंग हैं– निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढ़दृष्टि, उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य और प्रभावना।

जिनेन्द्रदेव द्वारा कथित तत्त्व यही है, ऐसा ही है, अन्य कुछ नहीं है और अन्य रूप भी नहीं है। तलवार की धार पर रखे हुए जल के सदृश ऐसा अचलित श्रद्धान करना और मोक्षमार्ग में संशय सहित रुचि का होना निःशंकित अंग है।

बीसवीं सदी में प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज, प्रथम पट्टाचार्य चारित्रचूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज एवं उनकी परम्परा के समस्त आचार्य, साधुगण आगम के अनुसार चर्या करने वाले थे और आज भी हैं। वर्तमान में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, वर्तमान के सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित आर्यिका, युगप्रवर्तिका, गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं, जिन्होंने चारित्रचक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की आगम परम्परा को वृद्धिंगत किया है।

प्रस्तुत पुस्तक 'जैनागम में शासन देव-देवी' वर्तमान में उत्पन्न हो रही शंकाओं के समाधान के लिए पूज्य माताजी ने शासन देव-देवियों के प्रमाण को प्राचीन शास्त्रों से निकालकर लिखकर प्रदान किया है। आज कहीं-कही पर मंदिरों से क्षेत्रपाल, पद्मावती आदि शासन देव-देवियों को हटाया जा रहा है, जिससे अनेक श्रावकगण परेशान हैं। प्राचीनकाल से मंदिरों में क्षेत्रपाल, पद्मावती आदि की मूर्तियाँ रही हैं, अतः इन्हें अपने स्थान से हटाना कदापि उचित नहीं है।

इस पुस्तक को पढ़कर श्रावकगण आगम पर श्रद्धा करें और जो भी मंदिरों से शासन देव-देवी को हटाने को कहें, उन्हें जिनागम के प्रमाण दिखाकर अपनी बात की पुष्टि करें। युग की आदि से चौबीसों तीर्थंकरों के शासन देव-देवी मान्य रहे हैं और आज भी प्रायः अनेक मंदिरों में इनकी मूर्तियाँ विराजमान हैं।

इन उद्धरणों को पढ़कर आप सभी जैनागम के प्रति अपनी श्रद्धा को दृढ़ करें, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी आगम के ज्ञान को सभी श्रद्धालुओं को, ज्ञान पिपासुओं को वितरित करती रहें, स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–आर्यिका सुव्रतमती (संघस्थ)

नमः श्री वर्धमानाय, निर्धूतकलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां, यद्विद्या दर्पणायते।।

जैनधर्म अनादिनिधन धर्म है। अनादिकाल से 24 तीर्थंकर होते रहे हैं और अनंतकाल तक होते रहेंगे। 24 तीर्थंकरों के शासन देव-देवी या यक्ष-यक्षिणी भी अनादिकाल से होते रहे हैं, जिन्हें कभी भी नकारा नहीं जा सकता और ये सभी यक्ष-यक्षिणी सम्यग्दृष्टि होते हैं। इनकी भक्ति-आराधना का वर्णन अनेक ग्रंथों में आता है।

कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि मंदिरों में क्षेत्रपाल, पद्मावती आदि शासन देव-देवियों की मूर्तियाँ नहीं रखना चाहिए। जिससे समाज में दो वर्ग हो जाते हैं। शासन देव-देवियों को मानने वाले लोग जब पूज्य माताजी के पास आते हैं, तो इस विषय को लेकर काफी दुःखी होते हैं। वे कहते हैं–माताजी हम लोग क्या करें ? हमारे यहाँ काफी प्राचीन समय से पद्मावती, क्षेत्रपाल बाबा की, चक्रेश्वरी माता की, गोमुख यक्ष की प्रतिमाएँ विराजमान हैं। हम लोग क्या, हमारी कई पीढ़ियों के लोग शुरू से इनकी पूजा, अर्चना करते आए हैं। अब हम लोग कैसे उन्हें मंदिर से हटा दें। हमें इसके लिए शास्त्र के प्रमाण चाहिए।

पूज्य माताजी का कहना है कि इस विषय में सभी श्रावकों को कट्टर रहना चाहिए। कोई भी शासन देव-देवियों को मंदिरों से हटाने को कहे, तो कदापि नहीं हटाना चाहिए। इस विषय के प्रमाण अनेक प्राचीन शास्त्रों में हैं, जैसे–अभिषेकपाठ संग्रह, उमास्वामी श्रावकाचार, प्रतिष्ठासारोद्धार, जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय, वसुनन्दी-प्रतिष्ठापाठ, तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार, प्रतिष्ठातिलक आदि ग्रन्थों में यक्ष-यक्षी समेत प्रतिमाओं के, 24 तीर्थंकरों की शासन देव-देवियों के अनेक प्रमाण मौजूद हैं। अधिकतम मंदिरों में क्षेत्रपाल, पद्मावती देवी की प्रतिमाएँ विराजमान हैं, जिनकी लोग खूब ठाठ-बाठ से आराधना करते हैं।

इस पुस्तक में पूज्य माताजी ने अनेक प्राचीन तीर्थस्थानों पर विराजमान यक्ष-यक्षी सहित प्रतिमाओं एवं चक्रेश्वरी, गोमुख, अम्बिका देवी, ज्वालामालिनी, पद्मावती, क्षेत्रपाल आदि की प्रतिमाओं के चित्र भी दिए हैं।

इस पुस्तक का स्वाध्याय कर सभी साधुवर्ग, विद्वत् वर्ग, श्रावकगण इन शासन देव-देवियों को, जो कि जिनागम में मान्य हैं, उसे स्वीकार करें और अपने जैन ग्रंथों के स्वाध्याय में अपनी बुद्धि लगाएँ, यही मंगल भावना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)
जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना
माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन
क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती
आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।
साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।
डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।
तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा– भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ इत्यादि।
महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**
शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।
रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान–संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खेलावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।

जिनागम में शासन देव-देवी

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

जिनप्रतिमा का लक्षण
(यक्ष-यक्षी समेत)

शान्तप्रसन्नमध्यस्थनासाग्रस्थाविकारकृत।
सम्पूर्णभावरूपानुविद्धांगं लक्षणान्वितम्।।
रौद्रादिदोषनिर्मुक्तप्रातिहार्यां - कयक्षयुक्।
निर्माप्य विधिना पीठे जिनबिम्बं निवेशयेत्।।

(प्रतिष्ठासारोद्धार)

अर्थ—जिसके मुख की आकृति शांत हो, प्रसन्न हो, मध्यस्थ हो, नेत्र विकार रहित हो, दृष्टि नासिका के अग्रभाग पर हो, जो केवलज्ञान के सम्पूर्ण भावों से सुशोभित हो, जिसके अंग उपांग सब सुन्दर हों, रौद्र आदि भावों से रहित हों, आठों प्रातिहार्यों से विभूषित हों, चिन्ह से सुशोभित हों, यक्ष-यक्षी सहित हों और ध्यानस्थ हों, इस प्रकार के शुभ लक्षणों से सुशोभित जिनप्रतिमा बनवाना चाहिए और प्रतिष्ठा कराकर पूजा करनी चाहिए। जिस प्रतिमा में ये लक्षण न हों, वह अरहन्त की प्रतिमा नहीं कही जा सकती।

प्रातिहार्याष्टकोपेतां यक्षयक्षीसमन्विताम्।
स्वस्वलांच्छनसंयुक्तां जिनार्चांकारयेत्सुधीः।।

(जिनेन्द्र कल्याणाभ्युदय)

अर्थ—जो आठ प्रातिहार्यों से सुशोभित है, यक्ष-यक्षी सहित है और अपने-अपने चिन्हों से सुशोभित है, ऐसी प्रतिमा बुद्धिमानों को बनवानी चाहिए।

यक्षं च दक्षिणे पार्श्वे वामे शासनदेवताम्।
लाञ्छनं पादपीठाधः स्थापयेद् यस्य यद्भवेत्।।

(वसुनन्दी प्रतिष्ठापाठ)

अर्थ—जिनप्रतिमा के दाईं ओर यक्ष की मूर्ति होनी चाहिए, बाईं ओर शासन देवता अर्थात् यक्षी की मूर्ति होनी चाहिए और सिंहासन के नीचे जिनकी प्रतिमा हो, उनका चिन्ह होना चहिए।

स्थापयेदर्हतां छत्रत्रयाशोकप्रकीर्णके।
पीठं भामण्डलं भाषां पुष्पवृष्टिं च दुन्दुभिम्।।
स्थिरेतरार्चयोः पादपीठस्थायौ यथायथम्।
लांच्छनं दक्षिणे पार्श्वे यक्षो यक्षी च वामके।।

अर्थ—अरहन्त प्रतिमा के निर्माण के साथ-साथ तीन छत्र, अशोक वृक्ष, सिंहासन, भामण्डल, चमर, दिव्यध्वनि, दुन्दुभि, पुष्पवृष्टि ये आठ प्रातिहार्य अंकित होने चाहिए। प्रतिमा चाहे चल हों, चाहे अचल हों, परन्तु उनका चिन्ह सिंहासन के नीचे होना चाहिए।

अथ बिम्बं जिनेन्द्रस्य कर्तव्यं लक्षणान्वितम्।
कृत्वायतनसंस्थानं तरुणांगं दिगम्बरम्।।
मूलप्रमाणपर्वाणां कुर्यादष्टोत्तरं शतम्।
अङ्गोपांगविभागश्च जिनबिम्बानुसारतः।।
प्रातिहार्याष्टकोपेतं सम्पूर्णावयवं शुभम्।
भावरूपानुविद्धांगं कारयेद्बिम्बमर्हतः।।
प्रातिहार्यं बिना शुद्धं सिद्धं बिम्बमपीदृशम्।
सूरीणां पाठकानां च साधूनां च यथागमम्।।

अर्थ—भगवान जिनेन्द्रदेव की प्रतिमा लक्षण सहित बनवानी चाहिए। जो समचतुरस्र संस्थान हो, तरुणावस्था की हो, दिगम्बर हो, उसका आकार वास्तुशास्त्र के अनुसार दशताल प्रमाण हो, उसके आकार के एक सौ आठ भाग हों, अंग-उपांगों का विभाग प्रतिमा के अनुसार ही होना चाहिए। जो आठ प्रातिहार्यों से सुशोभित हो, जिसके सम्पूर्ण अवयव हों, जो शुभ हो, उसका शरीर केवलज्ञान को प्रकाशित करने वाले भावों से परिपूर्ण हों, इस प्रकार अरहन्त की प्रतिमा

बनवानी चाहिए। यदि उस प्रतिमा के साथ आठ प्रातिहार्य न हों, तो वह सिद्धों की प्रतिमा हो जाती है। आचार्य, उपाध्याय और साधुओं की प्रतिमा भी आगम के अनुसार बनवानी चाहिए।

कारयेदर्हतो बिम्बं प्रातिहार्यसमन्वितम्।
यक्षाणां देवतानां च सर्वालंकारभूषितम्।।
स्ववाहनायुधोपेतं कुर्यात्सर्वांगसुन्दरम्।

अर्थ—जिनप्रतिमा आठ प्रातिहार्य सहित होनी चाहिए तथा यक्ष-यक्षी सहित होनी चाहिए। वे यक्ष और यक्षी समस्त अलंकारों से सुशोभित होने चाहिए, अपने-अपने आयुध और वाहन सहित हों तथा सर्वांग सुन्दर हो।

सैद्धं नु प्रातिहार्याकयक्षयुग्मोज्झितं शुभम्।

अर्थ—जिस प्रतिमा में आठ प्रातिहार्य न हों और यक्ष-यक्षी न हो, उनको सिद्ध प्रतिमा कहते हैं।

अष्टप्रातिहार्यसमन्विताहर्त्प्रतिमा तद्रहिता सिद्धप्रतिमा।

अर्थ—जिस प्रतिमा में आठ प्रातिहार्य हो, वह अरहन्त की प्रतिमा है तथा जिसमें प्रातिहार्य नहीं है, वह सिद्ध प्रतिमा है।

प्रतिष्ठा के समस्त ग्रंथों में अरहन्त प्रतिमा का यही स्वरूप बतलाया है, त्रिलोकसार, राजवार्तिक में भी प्रतिमा का यही स्वरूप है। यथा—

सिंहासणादिसहिया विणीयलकुन्तल-सुवज्जमयदंता।
विद्रुम अहरा किसलयसोहायर हत्थपायतला।।
सिरि देवी सुअदेवी सव्वाण्हसणक्कुमारजक्खाणं।
रूवाणिय जिणपासे मंगलमट्ठविह मवि होई।।

-त्रिलोकसार गाथा 985-888

अर्थ—जिन प्रतिमा के निकट इन चारित्र का प्रतिबिम्ब होई है। यहाँ पर प्रश्न—जो श्री देवी तो धनादिक रूप है और सरस्वती जिनवाणी है। इनका प्रतिबिम्ब कैसे होई है। ताका-समाधान—श्री और सरस्वती ये दोऊ लोक में उत्कृष्ट हैं तातें इनका देवांगना का आकार रूप प्रतिबिम्ब होई है। बहुरि दोऊ यक्ष विशेष भक्त हैं तातें तिनके आकार हो हैं। आठ मंगल द्रव्य हों।

शासन देव-देवी के प्रमाण

गोवदणमहाजक्खा तिमुहो जक्खेसरो य तुंबुरओ।
मादंगविजयअजिओ बम्हो बम्हेसरो य कोमारो।।934।।

छम्मुहओ पादालो किण्णरकिंपुरुसगरुडगंधव्वा।
तह य कुबेरो वरुणो भिउडीगोमेधपासमातंगा।।935।।
गुज्झकओ इदि एदे जक्खा चउवीस उसहपहुदीणं।
तित्थयराणं पासे चेट्ठंते भत्तिसंजुत्ता।।936।।
जक्खीओ चक्केसरिरोहिणिपण्णत्तिवज्जसिंखलया।
वज्जंकुसा य अप्पदिचक्केसरिपुरिसदत्ता य।।937।।
मणवेगाकालीओ तह जालामालिणी महाकाली।
गउरीगंधारीओ वेरोटी सोलसा अणंतमदी।।938।।
माणसिमहमाणसिया जया य विजयापराजिदाओ य।
बहुरूपिणिकुंभंडी पउमासिद्धायिणीओ त्ति।।939।।[1]

गोवदन, महायक्ष, त्रिमुख, यक्षेश्वर, तुम्बुरव, मातंग, विजय, अजित, ब्रह्म, ब्रह्मेश्वर, कुमार, षण्मुख, पाताल, किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गंधर्व, कुबेर, वरुण, भृकुटि, गोमेध, पार्श्व, मातंग और गुह्यक, इस प्रकार ये भक्ति से संयुक्त चौबीस यक्ष ऋषभादिक तीर्थंकरों के पास में स्थित रहते हैं।।934-936।।

चक्रेश्वरी, रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रशृंखला, वज्रांकुशा, अप्रतिचक्रेश्वरी, पुरुषदत्ता, मनोवेगा, काली, ज्वालामालिनी, महाकाली, गौरी, गांधारी, वैरोटी, सोलसा अनन्तमती, मानसी, महामानसी, जया, विजया, अपराजिता, बहुरूपिणी, कूष्माण्डी, पद्मा और सिद्धायिनी, ये यक्षिणियाँ भी क्रमशः ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकरों के समीप में रहा करती है।।937-939।।

चमरकरणागजक्खगबत्तीसंमिहुणगेहि पुह जुत्ता।
सरिसीए पंतीए गब्भगिहे सुट्ठु सोहंति।।987।।
सिरिदेवी सुददेवी सव्वाण्हसणक्कुमारजक्खाणं।
रूवाणि य जिणपासे मंगलमट्ठविहमवि होदि।।988।।[2]

चमर। चमरकरनागायक्षगतद्वात्रिंशन्मिथुनैः पृथक् पृथक् गर्भगृहे सदृश्या पंक्त्या युक्ताः सुष्ठु शोभन्ते।।987।।

सिरि। तज्जिनप्रतिमापार्श्वे श्रीदेवी श्रुतदेवी सर्वाह्नसनत्कुमारयक्षाणां रूपाणि अष्टविधानि मङ्गलानि च भवन्ति।।988।।

गाथार्थ—वे जिनप्रतिमाएँ, चमरधारी नागकुमारों के बत्तीस युगलों और यक्षों के बत्तीस युगलों सहित, पृथक्-पृथक् एक-एक गर्भगृह में सदृश पंक्ति से

1. तिलोयपण्णत्ति, पृ. 266-267। 2. त्रिलोकसार पृ. 753, 754।

भली प्रकार शोभायमान होती हैं। उन जिनप्रतिमाओं के पार्श्वभाग में श्रीदेवी, श्रुतदेवी, सर्वाह्न यक्ष और सानत्कुमार यक्ष के रूप अर्थात् प्रतिमाएँ हैं तथा अष्टमंगल द्रव्य भी होते हैं। झारी, कलश, दर्पण, पङ्खा, ध्वजा, चामर, छत्र और ठोना ये आठ मंगल द्रव्य हैं। ये प्रत्येक मंगल द्रव्य 108-108 प्रमाण होते हैं।।987-988-989।।

इसी प्रकार तिलोयपण्णत्ती में भी कहा है–

सिरिसुददेवीणतहासव्वाण्हसणक्कुमार जक्खाणं।
रूवाणिं पत्तेक्कं पडि वररयणइरइदाणिं।।1881।।

(चतुर्थ अधिकार)

अर्थ–प्रत्येक प्रतिमा के प्रति उत्तम रत्नादिकों से रचित श्रीदेवी, श्रुतदेवी तथा सर्वाह्न व सानत्कुमार यक्षों की मूर्तियाँ रहती हैं।।1881।।

(त्रिलोकसार, पृ. 753-754)

विश्वेश्वरादयो ज्ञेया देवता शांतिहेतवे।
क्रूरास्तु देवताः हेया येषां स्याद्वृत्तिरामिषैः।।

अर्थ–जिनागम में विश्वेश्वर, चक्रेश्वरी, पद्मावती आदि देवता शान्ति के लिए बतलाये हैं। परन्तु जिन पर बलि चढ़ाई जाती है, जीव मारकर चढ़ाये जाते हैं, ऐसे चण्डी-मुण्डी आदि देवता त्याग करने योग्य हैं। इसका भी खुलासा इस प्रकार है–

मिथ्यात्वपूरिताः क्रूराः सशस्त्राः सपरिग्रहाः।
निंद्या आमिषवृत्तित्वा-न्मद्यपानाच्च हीनकाः।।1।।
कुदेवाश्च ताज्ञेया ब्रह्मोमाविष्णुकादयः।
प्रतिपत्तिश्च तासां हि मिथ्यात्वस्य च कारणम्।।2।।
तस्माद्धेयाः कुदेवास्ते मिथ्याभेषधरावहाः।
ग्राह्याः सम्यक्त्व सम्पन्ना जिनधर्मप्रभावकाः।।3।।
चक्रेश्वर्यादिदिक्पाला यक्षाश्च शांतिहेतवे।
सम्यग्दर्शनयुक्तत्वात्ते पूज्या जिनशासने।।4।।
नाप्यस्ति मूढता तत्र दृगादिपूजने यतः।

–मंत्रप्रदीप

अर्थ–जो देव मिथ्यात्वी, क्रूर, हिंसक हैं, शस्त्र, परिग्रह सहित हैं, मांस की वृत्ति और मद्य की वृत्ति होने से निंद्य और हीन हैं, ऐसे ब्रह्मा, विष्णु, उमा,

चण्डी, मुण्डी आदि देवता कुदेवता कहाते हैं। उनकी पूजा करना मिथ्यात्व का कारण है। इसलिए मिथ्या भेष को धारण करने वाले ऐसे कुदेव त्याज्य हैं, परन्तु जो देव सम्यग्दृष्टि हैं जो जिनधर्म की प्रभावना करने वाले हैं, ऐसे चक्रेश्वरी, दिक्पाल, यक्ष आदि देवता शान्ति प्रदान करने वाले हैं। ऐसे देव सम्यग्दृष्टी होने के कारण पूज्य हैं, ऐसा जैन शास्त्रों का आदेश है, उनकी पूजा करने में देवमूढ़ता नहीं होती क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव सदा पूज्य होता है।

पूजा के प्रकरण में प्रमाण

श्री पूज्यपाद आचार्य देव ने जो अपने 'अभिषेक पाठ' के अन्त में जो यक्ष-यक्षी आदि के अर्घ्य चढ़ाने के लिए कहा है, उसका पूरा क्रम और विधि 'प्रतिष्ठातिलक' ग्रंथ में उपलब्ध है।

पूजा प्रारंभ विधि में जो क्रिया है वह सब श्री पूज्यपादस्वामी के अभिषेक पाठ के प्रारंभिक श्लोकों के अनुसार ही है सो देखिये–

आनम्यार्हंतमादावहमपि विहितस्नानशुद्धिः पवित्रैः।
तोयैः सन्मंत्रयंत्रैर्जिनपतिसवनाम्भोभिरप्यात्तशुद्धिः।।
आचम्यार्घ्यं च कृत्वा शुचिधवलदुकूलान्तरीयोत्तरीयः।
श्रीचैत्यावासमानौम्यवनतिविधिना त्रिःपरीत्य क्रमेण।।1।।
द्वारं चोद्घाट्य वक्त्राम्बरमपि विधिनेर्यापथाख्यां च शुद्धिं
कृत्वाहं सिद्धभक्तिं बुधनुतसकलीसत्क्रियां चादरेण।।
श्री जैनेन्द्रार्चनार्थं क्षितिमपि यजनद्रव्यपात्रात्मशुद्धिं।
कृत्वा भक्त्या त्रिशुद्ध्या महमहमधुना प्रारभेयं जिनस्य।।2।।[1]

''पूजा अभिषेक के प्रारंभ में स्नान करके शुद्ध हुआ मैं अर्हंत देव को नमस्कार करके पवित्र जलस्नान से, मंत्रस्नान से और व्रतस्नान से शुद्ध होकर आचमन कर, अर्घ्य देकर, धुले हुए सफेद धोती और दुपट्टे को धारण कर, वंदना विधि के अनुसार तीन प्रदक्षिणा देकर जिनालय को नमस्कार करता हूँ।

तथा द्वारोद्घाटन कर और मुख वस्त्र पहनकर विधिपूर्वक ईर्यापथ शुद्धि करके, सिद्धभक्ति करके, सकलीकरण करके, जिनेन्द्रदेव की पूजा के लिए भूमिशुद्धि, पूजा द्रव्य की शुद्धि, पूजा पात्रों की शुद्धि और आत्म शुद्धि करके भक्तिपूर्वक मन, वचन, काय की शुद्धि से अब जिनेन्द्रदेव का महामह अर्थात्

1. अभिषेक पाठ संग्रह, पृ. 1

अभिषेक पूजा प्रारंभ करता हूँ।

इस कथित विधि के अनुसार आचार्य श्री नेमिचंद्र कृत प्रतिष्ठातिलक में क्रम से सर्वविधि का वर्णन है। प्रारंभ में जलस्नान के अनंतर ''मंत्रस्नान'' विधि का वर्णन है। अनंतर ''पूजामुख विधि'' शीर्षक में मंदिर में प्रवेश करने से लेकर सिद्धभक्ति तक का वर्णन है। अर्थात् मंदिर में प्रवेश करना, प्रदक्षिणा देना, जिनालय की तथा जिनेन्द्रदेव की स्तुति करना, ईर्यापथ शुद्धि करके सकलीकरण करना, द्वारोद्घाटन, मुखवस्त्र उत्सारण (वेदी के सामने का वस्त्र हटाना) पुनः सामायिक विधि स्वीकार कर विधिवत् कृत्य विज्ञापना करके सामायिक दंडक, कायोत्सर्ग और थोस्सामि करके लघु सिद्धभक्ति करना यहाँ तक पूजामुख विधि होती है।

पुनः विधिवत् अभिषेक करने का विधान है। अनंतर नित्य पूजा के बाद अंत में जो विधि करनी चाहिये उसके लिये ''अभिषेक पाठ'' में ही अंत में चार श्लोक दिये गये हैं उन्हें देखिये–

निष्ठाप्यैवं जिनानां सवनविधिरपि प्रार्च्यभूभागमन्यं।
पूर्वोक्तैर्मंत्रयंत्रैरिव भुवि विधिनाराधनापीठयंत्रम्।।
कृत्वा सच्चंदनाद्यैर्वसुदलकमलं कर्णिकायां जिनेन्द्रान्।
प्राच्यां संस्थाप्य सिद्धानितरदिशि गुरून् मंत्ररूपान्निधाय।।37।।

जैनं धर्मागमार्चानिलयमपि विदिक्पत्रमध्ये लिखित्वा।
बाह्ये कृत्वाथ चूर्णैः प्रविशदसदकैः पंचकं मंडलानाम्।।
तत्र स्थाप्यास्तिथीशा ग्रहसुरपतयो यक्षयक्ष्यः क्रमेण।
द्वारेशा लोकपाला विधिवदिह मया मंत्रतो व्याह्वियन्ते।।38।।

एवं पंचोपचारैरिह जिनयजनं पूर्ववन्मूलमंत्रे-
णापाद्यानेकपुष्पैरमलमणिगणैरंगुलीभिः समंत्रैः।।
आराध्यार्हंतमष्टोत्तरशतममलं चैत्यभक्त्यादिभिश्च।
स्तुत्वा श्रीशांतिमंत्रं गणधरवलयं पंचकृत्वः पठित्वा।।39।।

पुण्याहं घोषयित्वा तदनु जिनपतेः पादपद्मार्चितां श्री-
शेषां संधार्य मूर्ध्ना जिनपतिनिलयं त्रिःपरीत्य त्रिशुद्ध्या।
आनम्येशं विसृज्यामरगणमपि यःपूजयेत् पूज्यपादं
प्राप्नोत्येवाशु सौख्यं भुवि दिवि विबुधो देवनंदीडितश्रीः।।40।।[1]

1. अभिषेक पाठ संग्रह, पृ. 12-13

अर्थ–इस प्रकार जिनेन्द्रदेव की पूजाविधि को पूर्ण करके पूर्वोक्त मंत्र-यंत्रों से विधिपूर्वक आराधनापीठ यंत्र की पूजा करे। पुनः चंदन आदि के द्वारा आठ दल का कमल बनाकर कर्णिका में श्री जिनेन्द्रदेव को स्थापित कर पूर्वदिशा में सिद्धों को, शेष तीन दिशा में आचार्य, उपाध्याय और साधु को विराजमान करके पुनः विदिशा के दलों में क्रम से जैनधर्म, जिनागम, जिनप्रतिमा और जिनमंदिर को लिखकर बाहर में चूर्ण से और धुले हुये उज्ज्वल चावल आदि से पंचवर्णी मंडल बना लेवे। इस कमल के बाहर पंचदश तिथिदेवता को, नवग्रहों को, बत्तीस इंद्रों को, चौबीस यक्षों को, चौबीस यक्षिणी को तथा द्वारपालों को और लोकपालों को विधिवत् मंत्रपूर्वक मैं आह्वानन विधि से बुलाता हूँ।

इस तरह पंचोपचारों से मंत्रपूर्वक जिन भगवान् का पूजन कर पूर्ववत् मूल मंत्रों द्वारा अनेक प्रकार के पुष्पों से, निर्मल मणियों की माला से या अंगुली से एक सौ आठ जाप्य करके अरहंतदेव की आराधना करे। पुनः चैत्यभक्ति आदि शब्द से पंचगुरुभक्ति और शांतिभक्ति के द्वारा स्तवन करके शांतिमंत्र और गणधरवलय मंत्रों को पाँच बार पढ़कर पुण्याहवाचन की घोषणा करना, इसके बाद जिनेन्द्रदेव के चरणकमलों से पूजित श्रीशेषा/आसिका को मस्तक पर चढ़ाकर जिनमंदिर की तीन प्रदक्षिणा देकर, मन, वचन, काय की शुद्धिपूर्वक जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार करके और अमरगण अर्थात् पूजा के लिये बुलाए गए देवों का विसर्जन करके जो व्यक्ति ''पूज्यपाद'' जिनेन्द्र भगवान् की पूजा करता है वह ''देवनन्दी'' से पूजित श्री विद्वान् मर्त्यलोक ओर देवलोक में शीघ्र ही सुख को प्राप्त करता है। (37 से 40)

पुनः प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ में देखिए–

नित्य अभिषेक पाठ में पहले पंचकुमार पूजा व दशदिक्पाल पूजा दी है। पुनः पंचामृत अभिषेक पाठ है। अनन्तर अष्टद्रव्य से भगवान की पूजा, श्रुतपूजा, गणधरदेव पूजा दी है। अनन्तर यक्ष-यक्षी की पूजा दी है।

अथ यक्ष पूजा

-उपजाति छंद-

यक्षं यजामो जिनमार्गरक्षा-दक्षं सदा भव्यजनैकपक्षम्।
निर्दग्धनिःशेषविपक्षकक्षं, प्रतीक्ष्यमत्यक्षसुखे विलक्षम्।।1।।

1. प्रतिष्ठातिलक, पृ. 27-28।

ॐ ह्रीं हे यक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं हे यक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं हे यक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (स्थापनं)।

ॐ ह्रीं यक्षाय इदमर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् स्वाहा।

अथ यक्षी पूजा

-उपजाति छंद-

यक्षीं सपक्षीकृतभव्यलोकां, लोकाधिकैश्वर्यनिवासभूताम्।
भूतानुकंपादिगुणानुमोदां, मोदांचितामर्चनमातनोमि।।1।।[1]

ॐ ह्रीं हे यक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं हे यक्षि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं हे यक्षि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (स्थापनं)।

ॐ ह्रीं हे यक्षीदेवि! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् प्रतिगृह्यताम् स्वाहा।

अनंतर नवदेवता की पूजा के बाद क्रमशः चौबीय यक्ष व चौबीस यक्षी– जिनशासन देव-देवियों के भी अर्घ्य हैं। यथा–

चौबीस यक्ष पूजा

-उपजाति छंद-

यक्षाधिका रक्षितधर्ममार्गा, ये गोमुखाद्यास्त्रिगुणाष्टसंख्याः।
तृतीयसन्मंडलवर्तिनस्तान्-सपर्यया प्रीतिजुषस्तनोमि।।13।।[2]

ॐ ह्रीं गोमुख-महायक्ष-त्रिमुख-यक्षेश्वर-तुंबरु-कुसुम-वरनंदि-विजय-अजित-ब्रह्मेश्वर-कुमार-षण्मुख-पाताल-किन्नर-किंपुरुष-गरुड-गंधर्व-खेन्द्र-कुबेर-वरुण-भृकुटि-सर्वाण्ह-धरणेन्द्र-मातंगाभिधानचतुर्विंशतियक्षदेवताः! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट्।

ॐ ह्रीं गोमुख-महायक्ष-त्रिमुख-यक्षेश्वर-तुंबरु-कुसुम-वरनंदि-विजय-अजित-ब्रह्मेश्वर-कुमार-षण्मुख-पाताल-किन्नर-किंपुरुष-गरुड-गंधर्व-खेन्द्र-कुबेर-वरुण-भृकुटि-सर्वाण्ह-धरणेन्द्र-मातंगाभिधानचतुर्विंशतियक्षदेवताः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं गोमुख-महायक्ष-त्रिमुख-यक्षेश्वर-तुंबरु-कुसुम-वरनंदि-विजय-अजित-

1. प्रतिष्ठातिलक, पृ. 27-28। 2. प्रतिष्ठातिलक, पृ. 33।

ब्रह्मेश्वर-कुमार-षण्मुख-पाताल-किन्नर-किंपुरुष-गरुड-गंधर्व-खेन्द्र-कुबेर-वरुण-भृकुटि-सर्वाण्ह-धरणेन्द्र-मातंगाभिधानचतुर्विंशतियक्षदेवताः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

ॐ ह्रीं गोमुखादिचतुर्विंशतियक्षेभ्य इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

चौबीस यक्षी पूजा

-उपजाति छंद-

सम्यक्प्रभावितजिनेश्वरशासनश्री-चक्रेश्वरीप्रभृतिशासनदेवता याः।
यक्षप्रमाणकलिता गुणिसंघगृह्यास्तास्तुर्यमंडलगता बलिना धिनोमि।।14।।[1]

ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी-रोहिणी-प्रज्ञप्ती-वज्रशृंखला-पुरुषदत्ता-मनोवेगा-काली-ज्वालामालिनी-महाकाली-मानवी-गौरी-गांधारी-वैरोटी-अनंतमती-मानसी-महामानसी-जया-विजया-अपराजिता-बहुरूपिणी-चामुंडी-कूष्मांडिनी-पद्मावती-सिद्धायिन्यश्चेति चतुर्विंशतिदेवताः! अत्र आगच्छत आगच्छत संवौषट्।

ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी-रोहिणी-प्रज्ञप्ती-वज्रशृंखला-पुरुषदत्ता-मनोवेगा-काली-ज्वालामालिनी-महाकाली-मानवी-गौरी-गांधारी-वैरोटी-अनंतमती-मानसी-महामानसी-जया-विजया-अपराजिता-बहुरूपिणी-चामुंडी-कूष्मांडिनी-पद्मावती-सिद्धायिन्यश्चेति चतुर्विंशतिदेवताः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी-रोहिणी-प्रज्ञप्ती-वज्रशृंखला-पुरुषदत्ता-मनोवेगा-काली-ज्वालामालिनी-महाकाली-मानवी-गौरी-गांधारी-वैरोटी-अनंतमती-मानसी-महामानसी-जया-विजया-अपराजिता-बहुरूपिणी-चामुंडी-कूष्मांडिनी-पद्मावती-सिद्धायिन्यश्चेति चतुर्विंशतिदेवताः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यादिशासनदेवताभ्य इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

दिग्पाल पूजा

श्री पूज्यपाद स्वामी ने अभिषेक पाठ में दशदिक्पाल का अर्घ्य दिया है–

पूर्वाशादेश हव्यासन महिषगते नैर्ऋते पाशपाणे।
वायो यक्षेन्द्र चन्द्राभरण फणिपते रोहिणीजीवितेश।।[2]

1. प्रतिष्ठातिलक, पृ. 33। 2. अभिषेक पाठ संग्रह, पृ. 5।

सर्वेऽप्यायात यानायुधयुवतिजनैः सार्धमों भूर्भुवः स्वः।
स्वाहा गृह्णीत चार्घ्यं चरुममृतमिदं स्वस्तिकं यज्ञभागं।।11।।

ॐ ह्रीं क्रों प्रशस्तवर्णसर्वलक्षणसम्पूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारा इन्द्राग्नियमनैर्ऋतवरुणवाहनकुबेरेशानधरणेन्द्रसोमनामदशलोकपाला आगच्छत आगच्छत संवौषट्, स्वस्थाने तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः, ममात्र सन्निहिता भवत भवत वषट् इदमर्घ्यं पाद्यं गृह्णीध्वं गृह्णीध्वं ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा।

इन्द्रादिदशलोकपालपरिवारदेवतार्चनम्।

(अभिषेक पाठ संग्रह, पृ. 5)

बृहत्स्नपन – श्री गुणभद्रभदन्त कृत अभिषेक पाठ में –

पृ. 25 से 28 तक दश दिक्पाल के अर्घ्य एवं क्षेत्रपाल का अर्घ्य है।

श्री अभयनंदि आचार्य विरचित 'लघु स्नपनं' की टीका में श्री भावशर्मकृतसंस्कृत टीका है।

उसमें पृ. 59-60 पर दश दिक्पालों के अर्घ्य हैं। पुनः पृ. 66 से 74 तक दशों दिक्पालों के पृथक्-पृथक् अर्घ्य हैं। यथा –

ॐ पूर्वस्यां दिशि कुण्डलांशनिचयव्यालीढगण्डस्थलं
शक्रं मूर्धनि बद्धसाधुमुकुटं स्वारूढमैरावतम्।
पत्नीबान्धवभृत्यवर्गसहितं देवं समाह्वानये
पाद्यार्घाक्षतदीपगन्धकुसुमं दत्तं मया गृह्यताम्।।15।।

ॐ पूर्वस्यां दिशि इन्द्रदेवमाह्वानयामहे स्वाहा। अथ पूजामंत्रः – हे इन्द्र! आगच्छ। इन्द्राय स्वाहा। इन्द्रमहत्तराय स्वाहा। इन्द्रपरिजनाय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। सोमाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहा। ॐ इन्द्रदिक्पालाय स्वगणपरिवृताय पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकमक्षतं यज्ञभागं च भावान्निवेदितं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा।

(लघुस्नपनं, पृ. 66-67)

श्री गजांकुशकवि विरचित 'जैनाभिषेक' में श्री प्रभाचंद्र देवकृत संस्कृत टीका है। इसमें पृ. 94 पर दशदिक्पाल का अर्घ्य है।

पं. श्री आशाधर विरचित 'नित्यमहोद्योत' अभिषेक पाठ में क्षेत्रपाल की विधिवत् पूजा है। यथा –

क्षेत्रपालाय यज्ञेऽस्मिन्नेतत्क्षेत्राधिरक्षिणे।
बलिं दिशामि दिश्यग्नेर्वेद्यां विघ्नविघातिने।।36।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं अत्रस्थक्षेत्रपाल! आगच्छागच्छ संवौषट्, तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, मम सन्निहितो भव भव वषट्, इदं जलाद्यर्चनं गृहाण गृहाण स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

विश्वम्भरामम्बुकुशानलाभ्यां संशोध्य सन्तर्प्य फणीन् सुधाभिः।
निक्षिप्य दर्भान्निखिलासु दिक्षु श्रीक्षेत्रपालाय बलिं ददामि।।37।।

क्षेत्रपाल का लक्षण

तमालतरुकान्तिभाक् प्रकटिताट्टहासास्यवान्,
दयागुणसमन्वितो भुजगभूषणैर्भीषणः।
कनत्कनकिंकणीकलितनूपुरारावान् ,
दिगम्बरवपुर्मया जिनगृहेऽर्च्यते क्षेत्रपः।।38।।

क्षेत्रपाल का स्नपन

सद्यस्केन सुगन्धेन स्वच्छेन बहलेन च।
स्नपनं क्षेत्रपालस्य तैलेन प्रकरोम्यहम्।।39।।
सिन्दुरैरारुणाकारैः पीतवर्णैः सुसंभवैः।
चर्चनं क्षेत्रपालस्य सिंदूरैः प्रकरोम्यहम्।।40।।
भोः क्षेत्रपाल! जिनपप्रतिमाङ्कभाल,
दंष्ट्राकराल जिनशासनवैरिकाल।
तैलाहिजन्मगुडचन्दन - पुष्पधूपै -
र्भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वरयज्ञकाले।।41।।

इदं जलादिकमर्चनं गृहाण गृहाण ॐ भूर्भुवःस्वः स्वधा स्वाहा इति क्षेत्रपालार्चनम्।

पुनः वास्तुदेव, वायुकुमार, मेघकुमार, अग्निकुमार, नागकुमार इन पंच कुमारों के आह्वानपूर्वक अर्घ्य हैं। यथा –

उत्खातपूरितसमीकृतसंस्कृतायां ,
पुण्यात्मनीह भगवन्मखमण्डपोर्व्याम्।
वास्त्वर्चनादिविधिलब्धमखादिभागं ,
वेद्यां यजामि शशिभृद्दिशि वास्तुदेवम्।।42।।

(नित्यमहोद्योतम्, पृ. 140 से 144)

पुनः दशदिक्पाल के पृथक्-पृथक् अर्घ्य हैं। यथा

रूप्याद्रिस्पर्धिघंटायुगपटुटङ्कारभग्नारिशुम्भद् -
भूषासख्यातिचित्रोज्वलकुथविलसल्लक्ष्मवर्ष्मद्विपस्थम्।
दृप्यत्सामानिकादित्रिदशपरिवृतं रुच्यशच्यादिदेवी-
लोलाक्षं वज्रभूषोद्धटसुभगरुचं प्रागिहेन्द्रं यजेऽहम्।।96।।

ॐ ह्रीं क्रों इन्द्र! आगच्छ आगच्छ संवौषट्, तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, मम सन्निहितो भव भव वषट् इन्द्राय स्वाहा। इन्द्रपरिजनाय स्वाहा, इन्द्रानुचराय स्वाहा, इन्द्रमहत्तराय स्वाहा, अग्नये स्वाहा, अनिलाय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, सोमाय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, ॐ स्वाहा, भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा, स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वःस्वाहा, ॐ इन्द्रदेवाय स्वगणपरिवृताय इन्दमर्घ्यं पाद्यं गधं पुष्पं धूपं दीपं चक्रं बलिं अक्षतं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा।

(नित्यमहोद्योत, पृ. 187-188)

शासन देव-देवी, क्षेत्रपाल, दिग्पाल आदि के आह्वानन-अर्घ्य-पूजा आदि के प्रमाण प्राचीन आगम ग्रंथों में तो हैं ही, वर्तमान में भी अहिच्छत्र, हस्तिनापुर आदि अनेक तीर्थों पर तथा तेरहपंथ आम्नाय के प्राचीन एवं अर्वाचीन मंदिरों में विराजमान हैं। इनकी पूजा-अर्चना भी आगम सम्मत है।

यहाँ इस पुस्तक में ''भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ'' (पं. श्री बलभद्र जैन द्वारा सम्पादित, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा प्रकाशित) नामक ग्रंथों से अनेक स्थानों पर विराजमान शासन-देव-देवियों के चित्र प्रदर्शित किए जा रहे हैं।

अनेक तीर्थस्थलों पर शासन देव-देवियों के चित्र

हुबली-अनन्तनाथ बसदि : तीर्थंकर पार्श्वनाथ, अगल-बगल में धरणेन्द्र और पद्मावती, दसवीं शती।

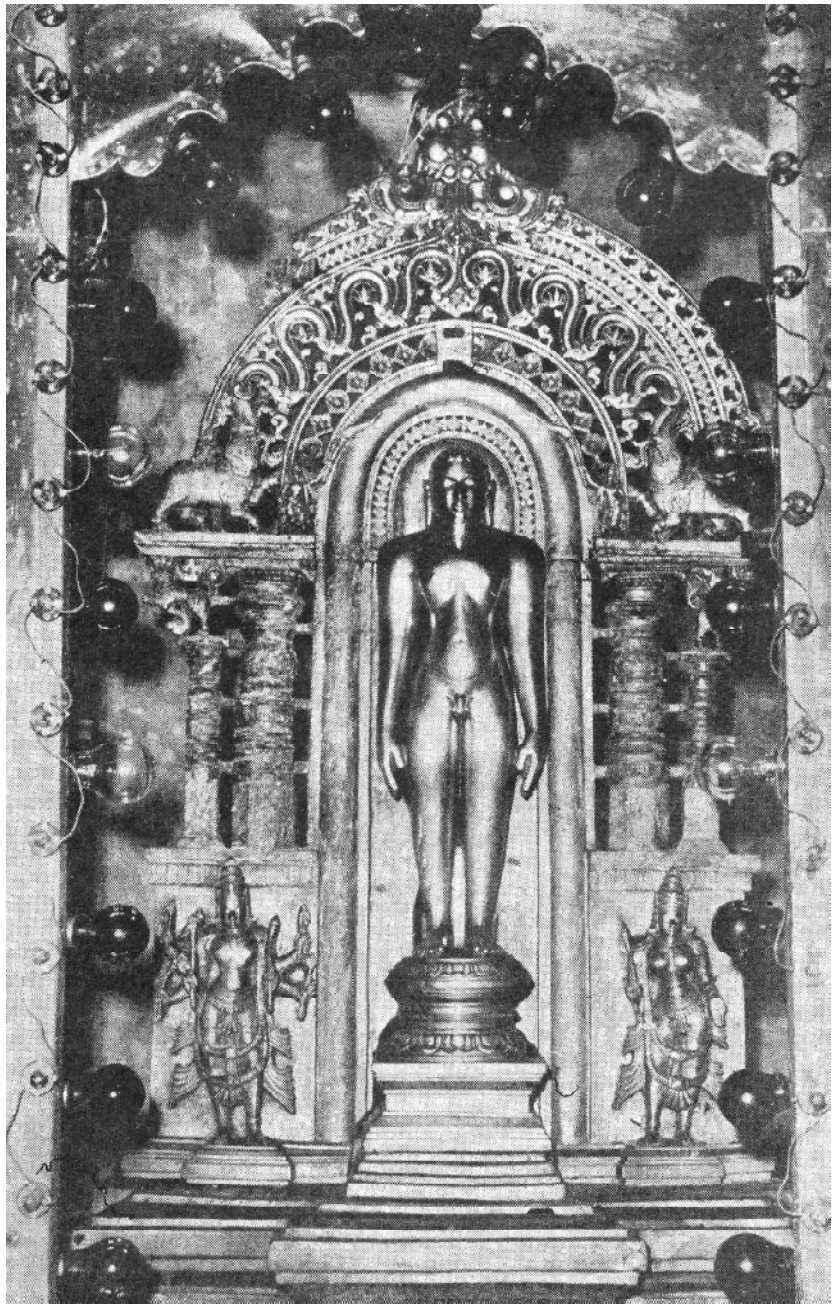

गुरुवायनकेरे-अनन्तनाथ बसदि : तीर्थंकर अनन्तनाथ की धातुमूर्ति शासन देव-देवी सहित

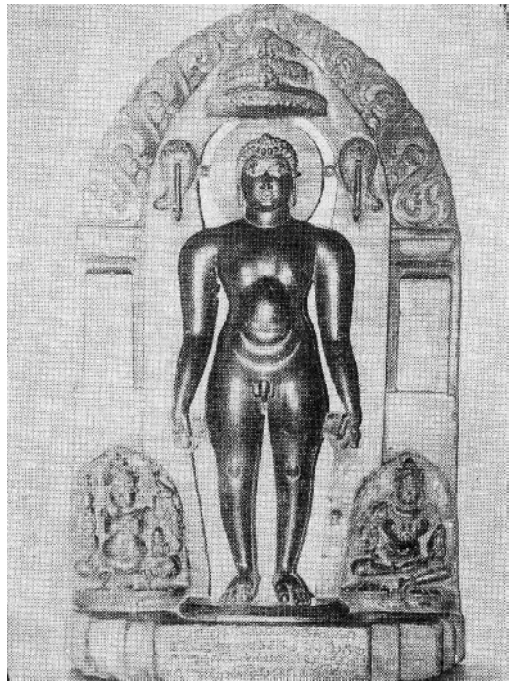

नेल्लिकर-पार्श्वनाथ बसदि : कायोत्सर्ग आसन में एक तीर्थंकर मूर्ति, चौदहवीं शती शासन देव-देवी सहित।

खजुराहो-शान्तिनाथ मंदिर में यक्ष-दम्पति।

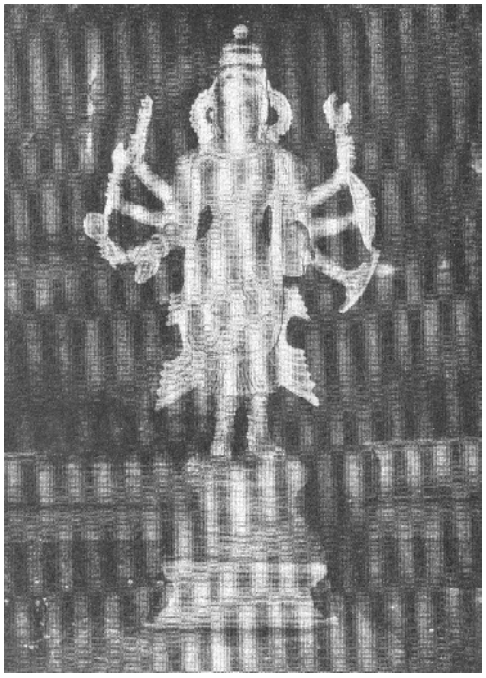

गेरुसोप्पा (जि. उत्तर कनारा)-ज्वालामालिनी बसदि में यक्षी जवालामालिनी की कांस्य मूर्ति, लगभग चौदहवीं शती।

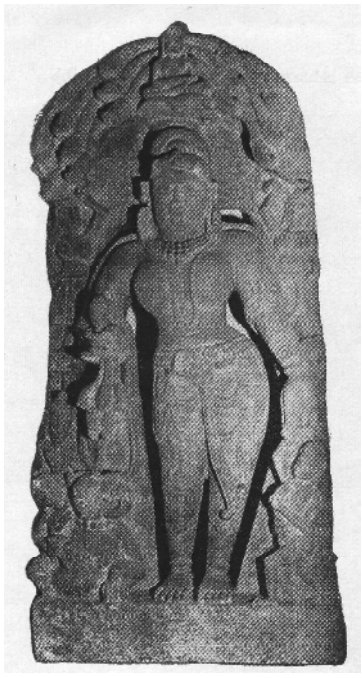

कारंजा : ब्रह्मचर्याश्रम के संग्रहालय में अम्बिका की प्राचीन मूर्ति।

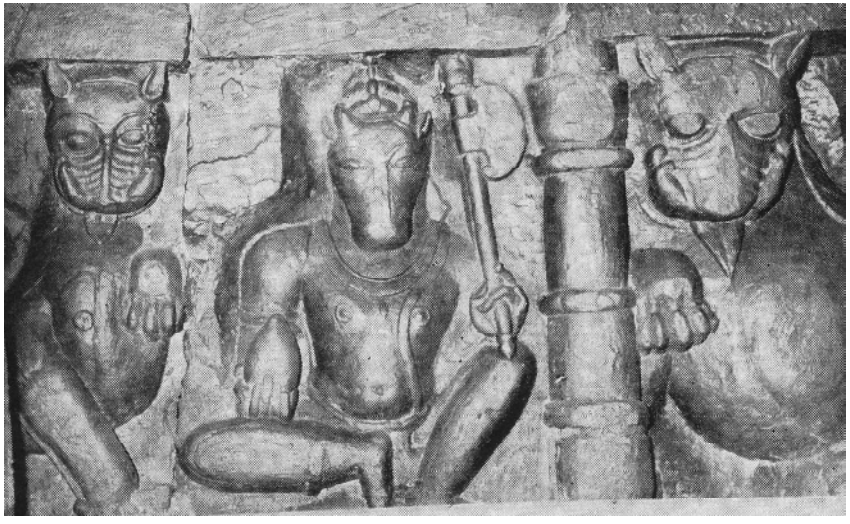

कुण्डलपुर-बड़े बाबा के पीठासन पर ऋषभदेव का यक्ष गोमुख

कुण्डलपुर-बड़े बाबा के पीठासन पर ऋषभदेव की यक्षी-चक्रेश्वरी।

सैरोन-गोमेध यक्ष और अम्बिका यक्षी। शीर्ष पर तीर्थंकर नेमिनाथ विराजमान हैं।

वाराणसी-उदयसेन खड्गसेन के जैन मंदिर में पद्मावती देवी की मनोज्ञ मूर्ति।

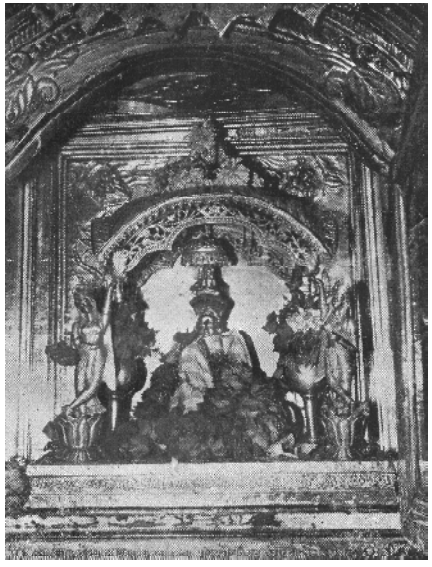

दिल्ली-श्री दिगम्बर जैन लाल मंदिर पद्मावती देवी की सातिशय प्रतिमा।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में विराजमान पद्मावती देवी प्रतिमा

जेवर्गी-शान्तिनाथ बसदि : यक्षी पद्मावती की कांस्य मूर्ति, लगभग चौदहवीं शती।

ऐहोल-आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ की यक्षी ज्वालामालिनी, लगभग ग्यारहवीं शती।

पद्मावती माता, अतिशय क्षेत्र हुमचा

बल्लभीपुर के निकट ढंकगिरि की जैन गुफा में प्राप्त तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा के साथ देवी अम्बिका

हुबली-अनन्तनाथ बसदि : एक जैन यक्षी, सोलहवीं शती।

उमता (बिसनगर) गुजरात में विराजमान चक्रेश्वरी देवी

देवगढ़-साहू जैन संग्रहालय में विंशतिभुजी चक्रेश्वरी।

नागफणी पार्श्वनाथ : मौदरगाँव के निकट पहाड़ पर बने मंदिर में धरणेन्द्र मूर्ति

नगर संग्रहालय प्रयाग में प्रदिर्शत पतियानदाई की अत्यन्त मनोहारी अनुमानतः गुप्तकालीन 23 यक्षियों सहित अम्बिका

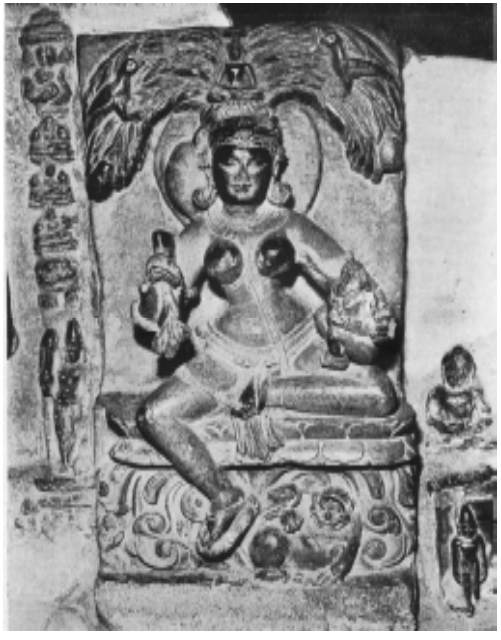

खण्डगिरि-पर्वत के बड़े मंदिर में अम्बिका की मूर्ति

श्री सिम्हनगड्डे बसदि मठ,
नरसिंहराजपुरा

खण्डगिरि-पर्वत पर बड़े मंदिर में गोमेद और अम्बिका यक्षी। शीर्ष भाग पर तीर्थंकर नेमिनाथ।

नरसिंहराजपुर (जि.-चिक्कमंगूर)-ज्वालामालिनी बसदि में यक्षी ज्वालामालिनी की पुष्प-मालाओं से अलंकृत मूर्ति।

मर्कुली-त्रिकूट बसदि :
चक्रेश्वरी यक्षी।

काकंदी (खुखुन्दू) में प्राप्त अम्बिका देवी की मूर्ति। समय 12वीं शताब्दी लखनऊ राजकीय संग्रहालय

कुण्डल : यक्षी पद्मावती।

चक्रेश्वरी देवी प्रतिमा, अतिशय क्षेत्र बिलहरी